

विषयानुक्रमिका

विषय

पृष्ठ संख्या

1. प्रस्तावना

1-06

गाथा क्रमांक

2. मङ्गलाचरण

1

3. ग्रन्थरचना का हेतु

2-3

4. प्रतिज्ञावाक्य एवं मङ्गलकामना

4

5. संघ बहिष्कृत कौन?

5

6. पंचम काल की विशेषता

6

7. मार्गच्युत क्या करता है?

7

8. आचार्य की विशेषता

8

9. आचार्य पद की पात्रता

9

10. दीक्षा की पात्रता

10

11. साधु के लिए वर्जित कार्य

11-12

12. अबन्दनीय कौन?

13-15

13. भ्रष्ट कौन?

16

14. आचार्य की आवश्यकता क्यों ?

17

15. आचार्य कैसा हो?

18-21

16. निग्रह योग्य कौन?

22

17. आचार्य प्रतिष्ठापन की विधि

23

18. दीक्षालग्न का शुभाशुभ विचार

24-32

19. प्रसङ्ग रहित गाथा

33

20. दीक्षालग्न का शुभाशुभ विचार

34-44

21. शुभलग्न का विकल्प ध्रुवपद-लग्न

45

22. ध्रुवपदच्छाया-लग्न का शुभाशुभ विचार

46-48

23. सूरिप्रतिष्ठापन कैसे करें (सूरिप्रतिष्ठा विधि)

49-70

24. आचार्य के कर्तव्य

71-75

25. आचार्य के अधिकार

76-77

26. पिच्छी अनिवार्य-आचार्य, साधु और आर्यिका के लिए	78
27. पिच्छी न होने पर अवन्दनीयता	79
28. उपसंहार	80

परिशिष्ट	पृष्ठ संख्या
29. अकारादिक्रम से गाथानुक्रमणिका	29-31
